✺ 29 जून 2014 (16-2-78) की मुरली से मुख्य पॉईन्टस् ✺

✺ ज्ञान-

1] एक ही समय पर तन, मन और धन, मन, वाणी और कर्म से सर्व प्रकार की सेवा साथ-साथ होने से सहज सफलता प्राप्त होती है। ऐसी स्टेज अनुभव करते हो? जैसे शारीरिक व्याधि, मौसम के प्रभाव में, वायुमण्डल के प्रभाव में, या खान पान के प्रभाव में, बीमारी के प्रभाव में आ जाते हैं। ऐसे मन की स्थिति पर प्रभाव पड़ता है। एवर हेल्दी के बजाय रोगी बन जाते। लेकिन एवर हेल्दी इन सब बातों में नॉलेजफुल होने के कारण सेफ रहते हैं।

2] इसी प्रकार एवर हेल्दी अर्थात् सदा सर्व शक्तियों के खजाने से, सर्व गुणों के खजाने से, ज्ञान के खजाने से सम्पन्न होंगे। क्या करूँ, कैसे करूँ, चाहते हैं लेकिन कर नहीं पाते हैं– कभी भी ऐसे शक्तियों की निर्धनता के बोल या संकल्प नहीं कर सकते। स्वयं को भी सदा सम्पन्न मूर्त अनुभव करेंगे और न्य निर्धन आत्माएं भी सम्पन्न मूर्त को देख उनकी भरपूरता की छत्रछाया में स्वयं भी उमंग, उत्साहवान अनुभव करेंगे। ऐसे ही एवर हैप्पी अर्थात् सदा खुश। कैसा भी दु:ख की लहर उत्पन्न करने वाला वातावरण हो, नीरस वातावरण हो, अप्राप्ति का अनुभव करानेवाला वातावरण हो, ऐसे वातावरण में भी सदा खुश रहेंगे और अपनी खुशी की झलक से दु:ख और उदासी के वातावरण को ऐसे परिवर्तन करेंगे जैसे सूर्य अन्धकार को परिवर्तन कर देता है।

3] स्वयं ही स्वयं को साक्षी बन चेक करो कि जो पार्ट बजाया वह यथार्थ व महिमा योग्य, चरित्र रूप में किया। हमेशा महिमा उस कर्म कही होती जो श्रेष्ठ होता है।

4] अगर कारण के बजाए निवारण में चले जाओ तो कारण ही निवारण बन जाये। ब्राह्मणों के आगे कोई परिस्थिति होती नहीं– क्योंकि मास्टर सर्वशक्तिमान हैं। उनके आगे यह परिस्थितियाँ चींटी समान भी नहीं।

5] हर कर्म में सबको ज्ञान का स्वरूप दिखाई दे– यही विशेष लक्ष्य रखो क्योंकि कर्म ऑटोमेटिक (स्वत:) सबका अटेन्शन खिंचवाते हैं। प्रैक्टिकल कर्म एक बोर्ड का काम करता है। कर्म देखते ही सबका अटेन्शन जाता है कि ऐसे कर्म सिखलाने वाला कौन।

6] क्वालिटी अच्छी है तो क्वान्टिटी बन ही जायेगी। मेहनत करते चलो सफलता जन्मसिद्ध अधिकार है।

7] सब संकल्प छोड़ एक संकल्प में रहो, मैं कल्प-कल्प की विजयी हूँ, विजय हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है, तो सफलता ही सफलता है। संकल्प किया और सफलता मिली इसलिए ज्यादा नहीं सोचो। प्लान बनाओ लेकिन कमल फूल समान हल्का रहो। सोचा, किया और समाप्त।

✺ योग-

1] याद अर्थात दिलतख्तनशीन। बापदादा को जो निरन्तर योगी बच्चे हैं वह सदा साथ रहते हुए नज़र आते हैं। सहजयोगी हो ना।

...2

❋ **धारणा-**

1] किसी भी प्रकृति वा वातावरण के, परिस्थितियें के प्रभाव के वश नहीं बनो। जैसे कमल का पुष्प कीचड़ और पानी के प्रभाव में नहीं आता। ऐसे होता ही है, इतना तो जरूर होना चाहिए, ऐसा तो कोई बना नहीं है, ऐसे होता ही है, इतना तो जरूर होना ही चाहिए, ऐसा तो कोई बना नहीं है, ऐसे प्रभाव में नहीं आओ। कोई भले न बना हो लेकिन आप बनकर दिखाओ। जैसे शुद्ध संकल्प रखते हो कि पहले नम्बर में हम आकर दिखायेंगे, विश्व महाराजन् बनकर दिखायेंगे वैसे वर्तमान समय पहले मैं बनूँगा। बाप को फालो कर नम्बरवन में एक्जैम्पुल बनकर दिखाऊंगा। ऐसा लक्ष्य रखो। लक्ष्य के साथ लक्षण धारण करते रहो। इसमें पहले मैं, यह दृढ़ संकल्प रखो। इसमें दूसरे को नहीं देखो, स्वयं को देखो और बाप को देखो तब कहेंगे चेलैन्ज औ प्रैक्टिकल समान है।

2] अभी दिव्य गुणों का श्रृंगार और अधिकर करना है। मर्यादा की लकीर के अन्दर रहते हुए मर्यादा पुरूषोत्तम का टाइटल लेने का अटेन्शन हो तो यह ताज और तिलक अटेन्शन देकर धारण करना।

3] तो एक्टर बन एक्ट करो फिर साक्षी बन चेक करो कि महान हुआ या साधारण। जन्म ही अलौकिक है तो कर्म भी अलौकिक होने चाहिए, साधारण नहीं। संकल्प में ही चेकिंग चाहिए क्योंकि संकल्प ही कर्म में आता है। अगर संकल्प को ही चेक कर चेन्ज कर दिया तो कर्म महान होंगे। सारे कल्प में महान आत्मायें प्रैक्टिकल में आप हो, तो संकल्प से भी चेकिंग और चेन्ज। साधारण को महानता में परिवर्तन करो।

4] जितना एक संकल्प में रहेंगे उतनी टचिंग अच्छी होती रहेगी। ज्यादा संकल्प में रहने से जो ओरीन्जल बाप की मदद है वह मिक्सअप हो जाती है इसलिए एक ही संकल्प कि मैं बाबा की, बाबा मेरा। मै निमित्त हूँ, इस संकल्प से सफलता अवश्य प्राप्त होगी।

❋ **सेवा-**

1] अन्धकार के बीच रोशनी करना, अशान्ति के अन्दर शान्ति लाना, नीरस वातावरण में खुशी की झलक लाना इसको कहा जाता है एवर हैप्पी । ऐसी सेवा की आवश्यकता अभी है न कि भविष्य में।

2] सर्विसएबुल अर्थात् हर संकल्प, बोल और कर्म सर्विस में साथ-साथ लगा हुआ हो। त्रिमूर्ति बाप के बच्चे हो ना तो तीनों ही सर्विस साथ-साथ चलती हैं? मन्सा द्वारा आत्माओं को बाप से बुद्धियोग लगाने की सेवा, वाणी द्वारा बाप का परिचय देने की सेवा और कर्म द्वारा दिव्यगुण मूर्त बनाने की सेवा, वाणी द्वारा बाप का परिचय देने की सेवा और कर्म द्वारा दिव्यगुण मूर्त बनाने की सेवा। तो मुख्य सब सबजेक्ट योग, ज्ञान और दिव्य गुण तीनों ही साथ-साथ हों, ऐसे हर सेकेण्ड अगर पावरफुल सर्विस करने वाले हैं तो जैसे गायन है मिनट-मोटर वैसे एक सेकेण्ड में मरजीवा बनने की स्टेम्प लगा सकते हो। यही अन्तिम सेवा का रूप है। अभी वाणी द्वारा कहते बहुत अच्छा लेकिन अच्छा नहीं बनते। जब वाणी और मन्सा से और कर्म से तीनों सेवा इकट्ठी होंगी तब ऐसे नहीं कहेंगे कि बहुत अच्छा है लेकिन मुझे प्रैक्टिकल बनकर दिखाना है, ऐसे अनुभव में आ जायेंगे। तो ऐसे सर्विसएबुल बनो।

3] अब चारों ओर आवाज फैलाने का बहुत जल्दी प्रयत्न करो क्योंकि अभी समय है फिर इच्छा होगी लेकिन सरकमस्टान्सेज ऐसे होंगे कि कर नहीं सकेंगे इसलिए जितना जल्दी हो सके चक्रवर्ती बन सन्देश देते जाओ, बीज बोते जाओ।

4] मनोबल से सेवा करो तो उसकी प्रालब्ध कई गुणा ज्यादा मिलेगी।